an>

Title: Regarding distribution of compensation to the paddy growing farmers and fixing the rate of Kinnow .

श्री शेर सिंह गुबाया (फ़िरोज़पुर) : अध्यक्ष महोदया, मैं आपके द्वारा सरकार का ध्यान उन किसानों की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं जिन्हें देश की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है। आज हालात इस तरह के हो गए हैं कि वह रीढ़ की हड्डी ही टूट रही है। किसानों को उनकी फसल का वाजिब मूल्य नहीं मिलता है। मैं अपने क्षेत्र की बात आपको बताना चाहता हूं। मेरे क्षेत्र में 11, 21 की पैंडी और कीनू की फसल होती है। पिछली बार 11, 21 की पैंडी चार हजार रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से बिकी थी। इस बार किसानों से 1600 रुपए के हिसाब से पैंडी ले ली गई लेकिन आज उस पैंडी का रेट 2600 से 2800 रुपए प्रति क्विंटल हो गया है। किसानों को 800 रुपए प्रति एकड़ के हिसाब से घाटा पड़ रहा है और वे मरने की कगार पर पहुंच चुके हैं।

महोदया, मैं आपकी तरफ से सरकार से मांग करता हूं कि उन किसानों को 1600 रुपए और 2800 रुपए प्रति क्विंटल के बीच के नार्मल रेट के मुताबिक मुआवजा दिया जाए। इसके अलावा कीनू की फसल के बारे में कहना चाहता हूं। एबोर-फाल्का एरिया से कीनू आता है। कीनू पांच रुपए किलो मंडी में बिक रहा है। सरकार की तरफ से मार्केट में उसका रेट फिक्स होना चाहिए।

महोदया, कॉटन की फसल पूरी तरह से तबाह हो गई है। एक एकड़ में से एक क्विंटल कॉटन भी नहीं मिली है।